OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE & ENGINEERING

(Multidisciplinary Journal)

मूल्य और शान्ति शिक्षा

(Value and Peace Education)

डॉ॰ सुरेन्द्र पाल सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षक–शिक्षा विभाग धर्म समाज महाविद्यालय, अलीगढ़ (उ॰प्र॰)

सारांश : मूल्य और शान्ति शिक्षा, मानव को मूल्य और ज्ञान प्रदान कर उसके जीवन में शान्ति, समरसता व सद्भावना स्थापित करने की प्रक्रिया है। मूल्य और शान्ति शिक्षा मानव को समस्त सद्गुणों–प्रेम, करुणा, सौहार्द, दयालुता, करुणा, न्ययप्रियता, ईमानदारी, अनुशासनप्रिय, स्वच्छता से परिपूर्ण कर उसे दुर्गुणों व असामाजिक तत्वों से दूर करती है। समस्त संघर्षात्मक परिस्थितियों से न्यायोचित रूप से सरोकार करने हेतु आत्माविश्वास का प्रस्फुटिकरण करती है। मूल्य और शान्ति शिक्षा द्वारा ही लोकतंत्र का स्वरूप जीवंत रखा जा सकता है व वैश्विक अशान्ति तथा शीत युद्ध का सुगमतापूर्वक समाधान किया जा सकता है। मानव के मन की समसत दमित इच्छाओं को अनिष्टकारी स्वरूप में परिवर्तित होने से रोका जा सकता है। सकारात्मक विचारों का परिवहन कर व्यक्ति को उसकी अभिव्यक्ति करने देने की स्वीकृति प्रदान कर, उसके अनिष्टकारी विचारों को परिमार्जित किया जा सकता है। मानव की हिंसात्मक पाश्विक प्रवृत्ति का नाश कर उसे एक सुयोग्य, सुसभ्य मानव के रूप में परिणामित किया जा सकता है। मूल्य एवं शान्ति शिक्षा, शिक्षा को मात्र व्यवसायपरक न रहने देकर, शिक्षा के नवीनीकरण व मानव के सर्वांगीण विकास में सहायक, एक अद्वितीय मानव के निर्माण में सहायक व राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने वाली शिक्षा है। "शिक्षा से ज्यादा मूल्यवान कोई चीज नहीं होती, मूल्य एवं शान्तिपरक शिक्षा ही राष्ट्र के निर्माण की उत्तरदायिनी है।"

---∴∴∴---

प्रस्तावना

मूल्य एवं शान्ति शिक्षा किसी राष्ट्र की प्रगति की आधारशिला के रूप में कार्य करती है। किसी भी राष्ट्र का आधारस्तम्भ उसकी युवाशक्ति होती है। यदि बालकों में प्रारम्भ से ही वांछित, उचित मूल्यों का विकास किया जाए तो राष्ट्र उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग पर प्रशस्त होगा।

महात्मा गाँधी के अनुसार, **"यदि इस विश्व में वास्तविक शान्ति उत्पन्न करना चाहते हैं तो हमें बालकों से प्रारम्भ करना होगा।"** वास्तव में बालकों की शिक्षा को यदि मूल्यपरक रूप से निर्मित किया जाता है तो शान्ति व सद्भाव की कल्पना करना उचित होगा। वर्तमान समय में मानव वैश्विक चकाचौंध में इतना भ्रमित हो गया है कि मूल्य, सद्भावना, परोपकार, शान्ति, स्वच्छता, निर्मलता, सत्य, प्रेम, करुणा, सौहार्द, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठता आदि के स्थान पर छल–कपट, ईर्ष्या, घृणा, असत्य, बेईमानी, अनैतिकता, दुराचार, अनिष्ट कृत कार्यों ने ले ली है। मानव स्वयं के विषय में ही चिंतनशील है किन्तु फिर भी स्वयें के लिए कुछ उचित कार्य, वह न तो वर्तमान में कर रहा है और न ही उचित निर्णय लेने में समर्थ है। वह नकारात्मक विचारों से परिपूर्ण है और अनिष्ट कार्य कर स्वयं के जीवन को अशान्ति से परिपूर्ण किए हुए है।

महात्मा गाँधी के अनुसार, **"अपने विचारों को सकारात्मक रखो क्योंकि आपके विचार आपके शब्द जाते हैं। अपने शब्दों को सकारात्मक रखें क्योंकि आपके शब्द आपका व्यवहार बन जाते हैं। अपने व्यवहार को सकारात्मक रखें क्योंकि आपका व्यवहार आपकी आदतें बन जाता है। अपनी आदतों को सकारात्मक रखें क्योंकि आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं। अपने मूल्यों को सकारात्मक रखें क्योंकि आपके मूल्य ही आपका भाग्य बन जाते हैं।"**

मूल्य और शान्ति शिक्षा की अवधारणा

मूल्य और शान्ति शिक्षा, मूल्यों के द्वारा शान्ति स्थापना को निरुपित करती है। प्राचीनकाल से भ्ज्ञारत मूल्यों को संजोए हुए उत्कृष्ट तथा आदर्श संस्कृति का परिचायक रहा है। भारत की विविधता में एकता अनेक मूल्यों को स्वयं में समाये हुए शान्ति, सद्भावना, प्रेम व अनेक नैतिक मूल्यों को दिग्दर्शित करती है। वर्तमान स्थिति में वैश्विक स्तर पर मूल्यों का धूमिल होना वैश्विक अशान्ति का वातावरण उत्पन्न होने का महत्वपूर्ण कारण है। मानव जीवन में मूल्यों की स्थापना, मानव जीवन को शान्ति के मार्ग की ओर अग्रसारित करता है। बालक के जीवन में मूल्यों का आगमन उसके परिवार से प्रारम्भ होता है तत्पश्चात वह विद्यालय एवं समाज से इनको ग्रहण करता है। यही मूल्य उसके जीवन को उच्च

आदर्श प्रदान कर उसे शान्तिमय जीवन प्रदान करते हैं। अतः मूल्य और शान्ति शिक्षा दोनों का एकीकृत रूप वर्तमान परिस्थितियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

जैक आर0 फ्रेंकलिन के अनुसार, **"मूल्य आचार, सौन्दर्य, कुशलता या महत्व के वे मानदण्ड हैं, जिनका लोग समर्थन करते हैं, जिनके साथ वे जीते हैं तथा जिन्हें वे कायम रखते हैं।"**

इयान हैरिस के अनुसार, **"शान्ति शिक्षा मानव चेतना में शान्ति के मार्ग के प्रति वचनबद्धता निर्मित करने की आशा करती है।"**

यदि वास्तव में देखा जाए तो मूल्य एवं शान्ति शिक्षा पृथक बिन्दु नही हैं। दोनों एक–दूसरे को समेकित किए हुए, एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शान्ति शिक्षा मूल्य, ज्ञान और व्यवहार को विकसित करने की प्रक्रिया है जो दूसरों के साथ एवं वातावरण के साथ मनुष्य के सामंजस्य स्थापित करने की दिशा प्रशस्त करती है। वहीं दूसरी ओर मूल्य शिक्षा मानव जीवन की शान्ति को स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित करती है।

मूल्य और शान्ति शिक्षा के उद्देश्य

मूल्य और शान्ति शिक्षा स्वयं में विकास, समृद्धि, निर्माण व उन्नति को समाहित किए हुए हैं। इनका महत्वपूर्ण लक्ष्य एवं उद्देश्य, मानव, समाज, राष्ट्र व वैश्विक जगत के वातावरण उत्कृष्ट, समरसतापूर्ण, व उन्नत बनाना है। वैश्विक शान्ति स्थापित कर मानवीयता के अनेक गुणों न्याय, सत्य, प्रेम, समानता, आत्मीयता, स्वनियंत्रण, सद्भावना, सौहार्द आदि का विकास करना है। इसके अतिरिक्त मूल्य और शान्ति शिक्षा के कुछ विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत् हैं :–

- मानव में सहयोग तथा सौहार्द की भावना का विकास करना।
- मानव के विविध कौशलों, अभिवृत्तियों का उत्तरोत्तर विकास करना।
- मानव की आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास करना।
- मानव के प्रत्येक पहलू मानसिक, तार्किक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक आदि को नवीन स्वरूप प्रदान करना।
- मानव के व्यवहार को सकारात्मक स्वरूप प्रदान करना।
- मानव को मनोसामाजिक स्थिरता प्रदान करना।
- मानव के चंचल मन से दुर्भावना, हिंसा, घृणा, अविश्वास, अनिष्ट कृत्यों का विलोपन कर उसे सत्मार्ग की ओर प्रशस्त करना।
- मानव को मानव तथा वातावरण के विशेष स्वरूप तथा उनके महत्व के विषय में अवगत कराकर उसे संजाए रखने के विविध कौशलों से परिचित कराना।
- मानव को उसकी चैतनता का बोध कराना व उसकी शक्तियों से चित–परिचित कर समाज व राष्ट्रपयोगी स्वरूप में परिणामित करना।

मूल्य एवं शान्ति शिक्षा की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता

वर्तमान समय मूल्यों के विघटन का समय है, दिन प्रतिदिन हो रहा मूल्यों का ह्रास वैश्विक संकट का द्योतक है। 21वीं शताब्दी में अनेक दुराचार, अनिष्ट कृतकार्य, अविश्वास, शारीरिक–मानसिक विकार, आर्थिक संकट, नकारात्मक भावनाएँ, हिंसा, तनाव, टकराव, आतंकवाद, उग्रवाद तथा गम्भीर अमानवीय कृत्यों ने जन्म ले लिया है। मानव जीवन को इन समस्त बुराइयों से उबारने हेतु तथा उसमें सद्गुणों व सदाचार के विकास हेतु वर्तमान समय में मूल्य एवं शान्ति शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। अतः वर्तमान शिक्षा मात्र आजीविकानोमुख न होकर, शैक्षणिक व व्यवसायपरक न होकर नैतिकतापूर्ण व समग्रता लिए हुए मानव के सर्वांगण विकास में सहकारी होनी चाहिए। शिक्षा मात्र निर्देशों व चेतावनियों के अनुपालन तक सीमित न होकर बालक की आस्था, धर्म, संस्कृति, विचारधारा की सकारात्मक व सुनियोजित विकासकरणी के रूप में होनी चाहिए। जिससे प्रत्येक स्थिति में वह अपनी मानसिक क्षमताओं के आधार पर उचित व नैतिक–सामाजिक रूप से स्वीकार्य निर्णय लेने में समर्थ हो सके। वर्तमान समय में मूल्य एवं शान्ति शिक्षा निम्नवत् रूप से मानव के लिए अत्यन्त आवश्यक है :–

व्यक्तिगत जीवन हेतु : एक मानव, विशेषकर युवा वर्तमान समय में अपने भविष्य को लेकर सर्वाधिक चिंतनशील रहता है। वह अपने मन–मस्तिष्क में विविध कल्पनाओं का निर्माण कर उसको वास्तविक स्वरूप प्रदान करने का हर सम्भव प्रयास करता है किन्तु जैसे–जैसे वह असफल होता है नकारात्मक विचार उसके मस्तिष्क को अमानवीय कृत्य करने हेतु प्रेरित करते हैं। वह हिंसा, झूठ, चोरी, अनैतिक–अविश्वसनीय कृत्य कर, स्वयं के निर्णय एवं कल्पनाशीलता में इतना विलीन हो जाता है कि उचित–अनुचित में भेद करना उसके लिए सम्भव नहीं हो पाता। अतः मूल्य और शान्ति शिक्षा मानव को समस्या समाधान करने, तनाव प्रबन्धन, आन्तरिक नियंत्रण जैसे कौशलों का विकास करके उसे आत्मनियंत्रित, विस्तृत दृष्टिकोण प्रदान करने में सहायता करती है जिससे वह मात्र स्वयं के विषय में न सोचकर समस्त मानव जाति के हितों के विषय में विचारशील रहे तथा उचित व अनुकूलतम स्वरूप में स्वयं की कल्पनाओं को भी सार्थक कर सके। वास्तव में मूल्य एवं शान्ति ही व्यक्ति के जीवन को सार्थकता प्रदान करते हैं।

"जिस व्यक्ति का मन शान्त होता है, जो बोलते और काम करते समय शांत रहता है, वह वही व्यक्ति होता है जिसने सच को हासिल कर लिया हो और जो दुःखों से मुक्त हो चुका है।"
–गौतम बुद्ध

सामाजिक जीवन हेतु : मूल्य और शान्ति शिक्षा, समाज के सतत् विकास, सवर्द्धन हेतु वर्तमान समय की मूलभूत आवश्यकता बन गयी है। एक सभ्य, आदर्श समाज के निर्माण हेतु, उसके गुणात्मक ढंग से परिवर्तन तथा परिवर्द्धन हेतु मूल्य एवं शान्ति शिक्षा उतनी ही महत्वपूर्ण है जिस प्रकार किसी पौधे की वृद्धि हेतु जल आवश्यक होता है। प्रसिद्ध विद्वान स्टीफेन्स के अनुसार शैक्षणिक सुधार की एक महत्वपूर्ण आवश्यक शर्त शान्ति ही हो सकती है। अधिकांश विकासशील राष्ट्रों की प्राथमिक शिक्षा की स्थिति दयनीय एवं विचारणीय है जिससे समाज में पिछड़ापन, आर्थिक न्यूनता, कुपोषण, अस्वस्थता, शारीरिक–मानसिक विकार, असुरक्षा, हिंसात्मक प्रतिद्वंदिता, अन्याय, असहजता, अराजकता व दुष्व्यवहार की उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। जातीय एवं लैंगिक भेदभाव समाज में अपनी जड़ें फैला रहा है। नकारात्मक विचारधारा, आतंकवाद, धार्मिक कट्टरता, नवीन बढ़ते दुराचार समाज को भयभीत स्थिति में पहुँचा रहे हैं। इन सबसे मुथ्क्त हेतु, एक आदर्श, सुसंस्कृत सुसभ्य, विनयशील, उच्चस्तरीय समाज की स्थापना हेतु मूल्य और शान्ति शिक्षा द्वारा नवीन स्थितियों, परिस्थितियों तथा मनोस्थितियों का निर्माण वर्तमान समय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता है जिससे समाज उत्तरोत्तर वृद्धि, समृद्धि के मार्ग पर अग्रसारित हो सके।

"बच्चों को सामाजिक बुराइयों, छल–कपट व अपराध के विषय में भी ज्ञान देना आवश्यक है ताकि उन्हें अच्छाई व बुराई का ज्ञान हो और वे धूर्त इंसानों से अपनी रक्षा करने में सक्षम बनें।" ***–पवन कुमार***

"सभी बुराइयों से दूर रहने के लिए, अच्छाई का विकास कीजिए और अपने मन में अच्छे विचार रखिए।" ***–गौतम बुद्ध***

राष्ट्रीय जीवन हेतु : वर्तमान समय में राष्ट्रीय सद्भावना, राष्ट्रीय कर्तव्य व राष्ट्रीय हित में योगदान हेतु मूल्य एवं शान्ति शिक्षा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण आवश्यकता है। धार्मिक, साम्प्रदायिक, व संकुचित विचारधारा से धार्मिक कट्टरता, अराजकता का वातावरण, राष्ट्रीयता की भावना को न्यून कर देता है। मानव राष्ट्रीय हित में न सोचकर, लोकतंत्र की अवहेलना, व राष्ट्रीय पुरातत्वों का अपमान करता है। अतः राष्ट्रहित में स्वयं के कर्तव्यों के संज्ञान हेतु, लोकतंत्र में सक्रिय भूमिका के निर्वहन हेतु, लोकतंत्र की रक्षा हेतु, राष्ट्र में शान्ति की स्थापना हेतु, राजनैतिक सम्बधों में सौहार्द की स्थापना हतु, राष्ट्र के संरचनात्मक विकास हेतु मूल्य और शान्ति शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। इस शिक्षा के द्वारा ही राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जा सकती है व राष्ट्र को नवीन उन्नति प्रदान की जा सकती है।

"देश की सबसे बड़ी समस्या ये है कि यहाँ देश की समस्या को लोग देश की समस्या समझते हैं, अपनी नहीं।" ***–अमोल गेड***

अन्तर्राष्ट्रीय जीवन हेतु : इस विश्व में अनेक राष्ट्र हैं, जिनमें भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व भौगोलिक असमानताएँ प्राप्त हैं। किसी राष्ट्र की वैज्ञानिक प्रगति उत्तम है तो किसी राष्ट्र की आर्थिक व राजनैतिक स्थिति दुरुस्त है किन्तु फिर भी समस्त राष्ट्र आतंकवाद की समस्या से ग्रस्त हैं। कुछ राष्ट्र शीत युद्ध तो कुछ राष्ट्रों के मध्य विश्वयुद्ध ने वैश्विक अशान्ति को समय–समय पर उत्पन्न किया है। वर्तमान समय में भी वैश्विक आतंकवाद व शीत युद्धों ने अन्तर्राष्ट्रीय जगत में अराजकता, विनाशकारी समस्याएँ व अनेकों गम्भीर विचारणीय समस्याओं को उत्पन्न कर रखा है। अनेकों प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक दोहन भी अन्तर्राष्ट्रीय अशान्ति व अनेक प्राकृतिक आपदाओं का कारण बना हुआ है जिसका निहितार्थ एकमात्र अन्तर्राष्ट्रीय मूल्य एवं शान्ति शिक्षा स्वयं में समाहित किए हुए हैं। यदि औपचारिक रूप से वैश्विक स्तर पर सर्वजनहिताय व पर्यावरण से समरसता व आवश्यकतानुरूप उपयोग करने की मूल्यपरक शिक्षा दी जाए, बालक को मानव जीवन के महत्व के विषय में परिचित करने वाली, शान्ति स्थापना को कायम करने वाली शिक्षा प्रदान की जाए तो मनुष्य स्वयं वैश्विक समस्याओं के निराकरण में समर्थ हो सकेगा व वैश्विक उन्नति में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित कर सकेगा।

"ईर्ष्या और नफरत की आग में जलते हुए इस संसार में खुशी और हँसी कैसे स्थाई हो सकती है? अगर आप अंधेरे में डूबे हए हैं, तो रौशनी की तलाश क्यों नहीं करते? ***–गौतम बुद्ध***

वास्तव में वैश्विक समस्याओं के निराकरण के लिए मूल्य एवं शान्ति शिक्षा एक रौशनी है।

'मूल्य और शान्ति शिक्षा' तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण

मनोविज्ञान के अनुसार मनुष्य का मस्तिष्क दो भागों में विभाजित होता है, दायां भाग तथा बायां भाग। विविध मनोवैज्ञानिक अनुसंधान इस बात की पुष्टि करते हैं कि हमारे मस्तिष्क का दायां भाग सृजनशीता, कल्पना, विश्वास, प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता, आत्मज्ञान तथा अनेकों भावनात्मक गुणों को नियंत्रित व संचालित करता है। तथा बायां भाग तर्कणा शक्ति, तथ्यों, निर्णय, विश्लेषणात्मक क्षमता, भाषा, विचारों को नियंत्रित व संचालित करता है। वर्तमान समय इस प्रकार की शिक्षा की मांग करता है जिससे मानव के मस्तिष्क का सर्वांगीण विकास हो सके। मूल्य और शान्ति शिक्षा मानव मस्तिष्क के दायें भाग द्वारा नियंत्रित की जाने वाली समस्त भावनात्मक पहलुओं को वातावरण के अनुरूप विकसित कर उसे वातावरण से उचित सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करती है तथा बायें भाग द्वारा नियंत्रित विचारों एवं भाषा का भी उचित व आवश्यकतानुकूल अनिवार्य विकास करने में सहायक है।

इसके अतिरिक्त एक मनोविश्लेषक मनोवैज्ञानिक सिगमंड फ्रायड ने भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं एवं मानव के व्यवहार के विषय में बताया। इनके अनुसार व्यक्तित्व का गत्यात्मक पक्ष तीन अवस्थाओं द्वारा निर्मित होता है :–

- इदं
- अहम्
- पराअहम्

इदं की उत्पत्ति मनुष्य के जन्म के साथ ही होती है। यह व्यक्तित्व के विकास की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। इसमें मानव अपनी समस्त इच्छाओं की तात्कालिक संतुष्टि चाहता है। अतः इस अवस्था को उचित शिक्षा द्वारा ही नियंत्रित किया जा सकता है। अहम्, इदं तथा पराअहम् के मध्य संतुलन स्थापित करता है तथा पराअहम् नैतिक मूल्यों को दृष्टिगोचर करता है।

फ्रायड के अनुसार जब मानव अपनी इच्छाओं, कामवासनाओं, आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति में असफल होता है तो उसके भीतर, उसकी इच्छाओं की प्रतिपूर्ति न होने से एक अशान्ति व एहसास उत्पन्न होता है। जिन्हें वह स्वयं के भीतर ही दबा लेता है। तथा यह दमित इच्छाएँएवं कामवासनाएँ उसमें कुंठा, आत्महीनता, आत्मघृणा, आत्मालोचना जैसे विकार उत्ज्पन्न कर, उसमें आपराधिक व पाश्विक प्रवृत्ति को उत्पन्न करती है जिससे वह अमानवीय कृत्य करने लगता है। अतः मानव को इस असंगत भयाभय स्थिति से बचाने हेतु, प्रत्येक समस्या के न्यायोचित यथार्थ समाधान हेतु मूल्य और शान्ति शिक्षा का ज्ञान वर्तमान में अति आवश्यक है। मूल्य और शान्ति शिक्षा के द्वारा ही मानव प्रत्येक स्थिति का उत्तम व अनुकूल समाधान खोजने में समर्थ हो सकगा जिससे उसके जीवन की सुख–शान्ति यथापूर्वक बनी रहेगी तथा वह स्वयं की उन्नति कर समाज के एक उपयोगी नागरिक के रूप में स्थापित हो सकेगा।

मूल्य और शान्ति शिक्षा का महत्व

मूल्य और शान्ति शिक्षा मानव जीवन को नवीन स्वरूप प्रदान कर, उसे एक आदर्श, गुणशील नागरिक के रूप में परिणामित करती है जो समाज के साथ राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित करता है, इसका मानव जीवन में महत्व इस प्रकार है :–

- यह शिक्षा मानव में सकारात्मक विचारों का संचार कर, उत्तम संस्कार पदान कर उसके जीवन में आनंद व समरसता उत्पन्न करती है।
- यह शिक्षा मानव को आत्मबोध कराती है जिससे उसमें आत्मविश्वास का प्रस्फुटन होता है और मानव किसी भी कार्य को उसके निष्कर्ष तक पहुँचाने में सफल हो पाता है।
- यह शिक्षा मानव को समस्त दुष्पभावों के निराकरण में सहायक व समस्त दुविधाओं के सुलभ निराकरण करने की सामर्थ्य उत्पन्न करने में सहायक है।
- यह शिक्षा वर्तमान समय की समस्त चुनौतियों से दृढ़तापूर्वक साक्षात्कार व समस्त दुराचारों व दुष्कृत्यों के निराकरण हेतु एक सुयोग्य मार्ग भी प्रशस्त करती है तथा मानव को एक नैतिक, सामाजिक, चारित्रिक व सर्वगुण सम्पन्न नागरिक के रूप में निर्मित करती है।

- यह शिक्षा वैश्विक कर्तव्यों का बोध कराती है तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत की समस्याओं से चित–परिचित कर उनके निराकरण हेतु मारव को योग्य बनाती है।
- यह शिक्षा मानव का पर्यावरण के साथ प्रत्येक स्थिति में सामंजस्य स्थापित करने में तथा प्रकृति के यथोचित उपयोग के विषय में भी मानव को अवगत कराती है।
- यह शिक्षा मानव को उसकी आन्तरिक शक्तियों का बोध कराती है तथा उनका उचित, सउद्देश्यपूर्ण विकास कर, मारव को, स्वयं के विकास व समस्त मानवजाति के विकास हेतु निर्मित करती है।

उपसंहार

सरल एवं सुस्पष्ट स्वरूप में देखा जाए तो मूल्य और शक्ति शिक्षा द्वारा किसी बालक के व्यक्तित्व को अद्वितीय रूप से परिमार्जित किया जा सकता है। इससे बालक विविध परिस्थितियों में आत्ममंथन कर संतोषजनक निराकरण प्राप्त कर सकता है। वर्तमान समय की चकाचौंध, आधुनिकीकरण, नगरीकरण द्वारा उत्पन्न अनेक दुर्भावनाओं का संयमित नियंत्रण करने में यह शिक्षा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहित करती है। पुरातन संस्कृति, विद्वानजनों के सुविचार व हमारी समस्त धरोहरों का ज्ञान प्रदान कर उनके संयमन, संरक्षण व नवीन पीढ़ी में उसके हस्तान्तरण हेतु मूल्य एवं शंति शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है। वास्तव में वर्तमान समय में मानव ईर्ष्या और द्वेष के कारण जिस अनैतिक मार्ग पर आगे बढ़ रहा है उसके कदमों को सन्मार्ग पर अग्रसारित करने हेतु मानव जाति की उन्नति व सौराष्ट्र की प्रगति हेतु मूल्य और शान्ति शिक्षा का औपचारिक रूप से सार्वभौमिकरण ही अन्धकारमय अनैतिकता की ओर अग्रसारित मानवजाति के लिए प्रकाशमय किरणपुंज है।

"हमारा दिमाग सही मान पैदा करता है, सही मूल्य सही विचार पैदा करता है। सही विचार सही कार्य करते हैं।" ***–मार्क रिचर्डसन***

"अपनी प्राथमिकताओं को परिभाषित करें, अपने मूल्यों को जानें और अपने उद्देश्य में विश्वास करें। तभी आप खुद को दूसरों के साथ प्रभावी रूप से साझा कर सकते हैं।" ***– लेस ब्राउन***

"आपके व्यक्तित्व मूल, मूल्य निर्धारित करते हैं कि आप कौन हैं।" ***–टोनी हसिह***

REFERENCES

- शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रमन बिहारी लाल
- Research Journal of Humanities and Social Sciences https://rfhssonline.com/HTML
- htpps://m-hindi-webdunia.com/article/national-hindinews
- https://m.dialyhunt.in/news/india
- BHARATHINDUSTAN UNIVERSITY https://www.bdu.ac.in/cde/docs/ebook/B.Ed.
- PEACE & VALUE EDUCATION GLOBAL PERSPECTIVE https://data.conferenceworld.in/ESHM7/P469474.pdf
- https://hi.m.wikipediaprg/wiki
- https://hindi.theindianwire.com
- Psychology by Saundra K. Ciccarelli, J. Noland White adopted by Girishwar Misra.
- https://www.awakenthegreatnesswithin.com